IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, June 2026
Impact Factor: 8.2

वाल्मीकि रामायण के संदर्भ में विशेषणात्मक दृष्टि से रावण चरित्र की अवधारणा

Bhutan Oraon
Research Scholar, Department of Sanskrit
Sido Kanhu Murmu University, Dumka

वाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य की सर्वाधिक चर्चित कृतियों में से एक है और इसे भारतीय संस्कृति तथा नैतिक चेतना का एक प्रमुख स्तंभ माना जाता है। इस महाकाव्य की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की है, जिसमें आदर्श और यथार्थ, धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य द्वंद्वों का चित्रण मिलता है। यद्यपि राम को आदर्श मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है, फिर भी रावण जैसे पात्रों को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। केवल राम के आदर्शों पर केंद्रित दृष्टि रखने से रामायण की मानवीय तथा साहित्यिक समृद्धि का पूर्ण बोध नहीं हो पाता। सामान्य धारणा में रावण को अधर्म का प्रतीक, अहंकारी और अत्याचारी खलनायक माना जाता है, किंतु वाल्मीकि रामायण में उसका स्वरूप कहीं अधिक जटिल और परिष्कृत है। वाल्मीकि रावण को केवल एक राक्षस के रूप में चित्रित नहीं करते, बल्कि उसे विद्वान, पराक्रमी योद्धा, तपस्वी, कुशल शासक और विविधतापूर्ण व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं। रावण वेदों का ज्ञाता है, भगवान शिव का अनन्य उपासक है और अपार शक्तियों से संपन्न है। तथापि उसका अहंकार, कामना और सत्ता-लिप्सा उसे अधर्म के मार्ग पर ले जाती है। इस प्रकार रावण एक साथ ही शुभ और अशुभ, स्वर्गीय और पाशविक तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी यह जटिलता वाल्मीकि द्वारा प्रयुक्त भाषा और विशेषणों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।वाल्मीकि द्वारा प्रयुक्त विशेषण रावण के स्वभाव को समझने की उपाय हैं। ये विशेषण अलंकारिक सजावट के साथ साथ उसके व्यक्तित्व का निर्माण और विकास करते हैं। महाबल ,महावीर्य , वेदवित् , महाप्रज्ञ,अहंकारी , कामातुर आदि विशेषण उसके व्यक्तित्व के विविध पक्षों को उद्घाटित करते हैं। इन विशेषणों के माध्यम से वाल्मीकि रावण के नैतिक पतन की प्रक्रिया को भी सही रूप से अंकित करते हैं। विशेषणात्मक दृष्टि से देखने पर स्पष्ट होता है कि रावण न तो पूर्ण रूप से शुभ है और न ही पूर्ण रूप से अशुभ, वह असीम शक्ति के साथ आत्मसंयम के अभाव का जीवंत उदाहरण है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, June 2026 Impact Factor: 8.2

इस लेख में वाल्मीकि रामायण में प्रयुक्त विशेषणों के आधार पर रावण के चरित्र का विश्लेषण किया गया है, जिससे उसके विविध स्वरूप को समझा जा सके। साथ ही यह प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है कि विशेषण, महाकाव्यीय चरित्र-निर्माण का एक सशक्त साहित्यिक उपकरण हैं, जिसे वाल्मीकि द्वारा निपुणता के साथ प्रयोग किया गया है ।

मुख्य शब्द: महाकाव्य, रामायण,रावण,विशेषणात्मक दृष्टि, चरित्र-चित्रण,नैतिकता।

वाल्मीकि प्रयुक्त विशेषणों से रावण के चरित्र अत्यधिक जटिल और मानवीय बनता है । विशेषणात्मक अध्ययन से रावण के व्यक्तित्व के विविध शारीरिक, बौद्धिक, धार्मिक, राजनीतिक, नैतिक और मनोवैज्ञानिक स्वरूप को स्पष्ट करना है, ताकि उसका समग्र मूल्यांकन करना संभव हो सके।

विद्वान रावण का विशेषणात्मक विश्लेषण

रावण पराक्रमी और तपस्वी के साथ साथ उच्चवर्ग का विद्वान भी था। उसके महाप्राज्ञः, वेदविद्, शास्त्रविशारदः, पण्डितः, विद्याधरःप्रमुख विशेषणों का प्रयोग किया गया है । वाल्मीकि रामायण के विविध श्लोकों से यह स्पष्ट होता है कि वह वेद, वेदाङ्ग, शास्त्र, संगीत और तंत्रविद्या में निपुण था। उसकी विद्वत्ता का आधार पुस्तकीय ज्ञान , गहन साधना, दीर्घकालीन अध्ययन और अनुभूति से प्राप्त बौद्धिक प्रखरता थी। ब्रह्मा को प्रसन्न करने में रावण की सफलता उसके तपोबल के साथ-साथ उसके शास्त्रीय ज्ञान की भी दर्शाता है। रावण का वेद अध्ययन इतना व्यापक था कि वह ब्रह्मघोषों और यज्ञीय मंत्रों का सूक्ष्म अर्थ समझने में समर्थ होते थे । उसकी विद्वत्ता का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वह शास्त्रों का प्रयोग चतुराई के साथ आध्यात्मिक उन्नति और राजनीतिक और सामरिक रणनीति के लिए भी करता था। यही कारण है कि वे वरदान माँगते समय शब्दों के चयन में असाधारण सावधानी बरतते थे और वर को अपने पक्ष में निर्धारित करने में सक्षम रहते थे । रावण वैदिक परम्परा का ज्ञाता एवं विद्वान भी माना गया है । वाल्मीकि रामायण के अरण्य कांड में विद्वान रावण का परिचय मिलता है । श्लोक इस प्रकार है -

"षडङ्गवेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव ब्रह्मघोषान् स विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्॥" (वा.रा .सु -18.2)

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, June 2026 Impact Factor: 8.2

इस श्लोक में रावण को "षडङ्गवेदविदुषाम्" विशेषण द्वारा विशेषित किया गया है । इसका अर्थ यह है की वह वेदों के छह अंगों–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द का सम्यक ज्ञाता थे । इस विशेषन से यह सिद्ध होता है की वे वेद पाठक थे एवं वेदांग के विद्वान भी थे । "क्रतुप्रवरयाजिनाम्" इस विशेषण से उनके यज्ञ-कर्मों का निपुणता एवं वैदिक नियम पालन के संपादनकर्ता होने का प्रमाण मिलता है। यहाँ यज्ञ का परिचायक 'क्रतु' और श्रेष्ठता का सूचक 'प्रवर' शब्द का प्रयोग मिलता है । "ब्रह्मघोषान् शुश्राव" पद से कहा जा सकता है रावण ब्रह्मज्ञान से युक्त मंत्रों के उच्चारण को समझने और सुनने की ज्ञान रखता था।

"विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्" विशेषन पद से यह स्पष्ट होता है कि रावण रात्रिकालीन वैदिक आचार - अनुष्ठानों से सम्बद्ध वैदिक परम्पराओं का भी ज्ञान रखता था। अतः इस श्लोक से रावण के चरित्र में निहित विशिष्ट विद्वत्ता, वेदों से सम्बंधित प्रज्ञा एवं धार्मिक ज्ञान विशेषणात्मक रूप में प्रतिष्ठित होते हैं ।

"सुपर्णनागयक्षाणां दैत्यदानवरक्षसाम्।
अवध्योऽहं प्रजाध्यक्ष्य देवतानां च शाश्वत॥" (वा.रा. उत्तर कांड - 10.19)

सुपर्ण-नाग-यक्ष-दैत्य-दानव-राक्षस" इस पद-समूह में विभिन्न शक्तिशाली प्रजातियों का एक साथ उल्लेख विशेषणात्मक अर्थ से युक्त है। रावण यहाँ अपने अस्तित्व को किसी एक जाति या लोक तक सीमित नहीं मानता। वह स्वयं को सुपर्णों, नागों, यक्षों, दैत्यों, दानवों और राक्षसों सभी से ऊपर स्थापित करता हुआ दिखाई देता है।यह समूहात्मक संकेत इस बात को स्पष्ट करता है कि रावण अपने को मात्र राक्षसों का अधिपति नहीं समझता, बल्कि वह समस्त अलौकिक शक्तियों के ऊपर स्थित एक सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वयं को देखता है। उसके कथन में एक प्रकार की सर्वश्रेष्ठता-भावना निहित है, जहाँ वह विभिन्न लोकों की सीमाओं को लाँघकर एक ऐसे शासक की कल्पना करता है, जिसकी सत्ता किसी एक वर्ग या समुदाय से बँधी हुई नहीं है। इसी प्रकार "प्रजाध्यक्ष" विशेषण रावण की शासन-क्षमता को रेखांकित करता है। यह शब्द यह दर्शाता है कि उसका प्रभुत्व केवल लंका तक सीमित नहीं था, बल्कि वह विभिन्न जातियों और लोकों की प्रजा पर नियंत्रण रखने वाला शासक था। श्लोक में "देवतानां च" का प्रयोग यह भी संकेत करता है कि रावण की शक्ति और प्रभाव देवताओं के क्षेत्र तक अनुभव किए जाते थे, जो उसके व्यक्तित्व की

असाधारणता को प्रमाणित करता है। अंततः "शाश्वत" विशेषण रावण के चरित्र को स्थायित्व और दृढ़ता प्रदान करता है। यह बताता है कि उसकी सत्ता और प्रभाव क्षणिक नहीं, बल्कि दीर्घकाल तक व्याप्त थे। इस प्रकार यह श्लोक रावण को केवल अधर्म का प्रतीक न मानकर, उसे विद्वान, प्रभावशाली, बहुआयामी और शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करता है। विशेषणात्मक अध्ययन की दृष्टि से यह दृष्टिकोण रावण-चरित्र को अधिक संतुलित बनाता है। प्रस्तुत श्लोक में रावण अपने लिए जिन विशेषणात्मक पदों का प्रयोग करता है, वे उसके व्यक्तित्व की विद्त्वा को स्पष्ट रूप से उद्घाटित करते हैं। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि रावण का व्यक्तित्व द्वंद्वात्मक है—एक ओर वह अधर्माचारी है, तो दूसरी ओर वह वेद-वेदाङ्गों में पारंगत महान विद्वान भी है। यही परस्पर-विरोधी विशेषताएँ उसके व्यक्तित्व को अधिक जटिल बनाती हैं। इन विशेषणों से स्पष्ट होता है कि रावण चारों वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों, व्याकरण, ज्योतिष और संगीत का ज्ञाता था। वह शिव का परम भक्त था और घोर तपस्या द्वारा उसने अपार ज्ञान प्राप्त किया था।विशेषणात्मक दृष्टि से रावण इस तथ्य का प्रतीक बनकर उभरता है कि केवल ज्ञान मनुष्य को महान नहीं बनाता; विवेक और विनय के अभाव में वही ज्ञान उसके पतन का कारण भी बन सकता है। वाल्मीकि यहाँ यह संकेत देते हैं कि विद्वत्ता तभी सार्थक है जब वह धर्म और संयम से संयुक्त हो।

योद्धा रावण का विशेषणात्मकविश्लेषण

वाल्मीकि द्वारा रावण के चरित्र-चित्रण में उसके अद्वितीय शौर्य, पराक्रम और युद्धकौशल को विशेष महत्व दिया गया है। इसी उद्देश्य से कवि ने उसके लिए महाबलः, अतिबलवान्, रणदुर्जयः, अपराजितः तथा वीरः जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। ये विशेषण केवल उसकी शारीरिक शक्ति का ही परिचय नहीं देते, बल्कि उसके प्रभावशाली योद्धा-व्यक्तित्व को भी उद्घाटित करते हैं। रावण ऐसा राजा था जिसने अपने सामर्थ्य और पराक्रम के बल पर अनेक दिशाओं में विजय प्राप्त की थी। उसका व्यक्तित्व एक दिग्विजयी सम्राट के रूप में उभरकर सामने आता है, जिसने पृथ्वी के विभिन्न राज्यों के साथ-साथ स्वर्ग और पाताल तक अपने प्रभाव का विस्तार किया। पौराणिक वर्णनों के अनुसार उसने देवराज इन्द्र को युद्ध में पराजित कर अपनी वीरता का परिचय दिया था। इतना ही नहीं, यमराज तथा कुबेर जैसे शक्तिशाली देवताओं को भी उसने युद्ध की चुनौती दी और अपने असाधारण साहस एवं आत्मविश्वास का प्रदर्शन किया। इस प्रकार वाल्मीकि द्वारा

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, June 2026
Impact Factor: 8.2

प्रयुक्त विशेषण रावण के उस रूप को प्रकट करते हैं, जिसमें वह केवल एक प्रतिनायक नहीं, बल्कि अद्भुत शक्ति, साहस और युद्धकौशल से संपन्न एक महापराक्रमी योद्धा के रूप में प्रतिष्ठित दिखाई देता है। यमराज और कुबेर पर विजय: उसने मृत्यु के देवता यमराज और धन के देवता कुबेर को भी युद्ध में चुनौती दी और पराजित किया।

मायावी और कूटनीतिज्ञरावण

रावण का व्यक्तित्व केवल असाधारण शारीरिक शक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि वह उच्च कोटि की युद्धकुशलता, दूरदर्शिता और रणनीतिक बुद्धिमत्ता से भी संपन्न था। वाल्मीकि रामायण में उसके चरित्र का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वह युद्धकला के विविध आयामों का ज्ञाता था। विशेषतः मायावी युद्ध में उसकी दक्षता उसे सामान्य योद्धाओं से भिन्न और अधिक प्रभावशाली बनाती है। वह परिस्थितियों के अनुसार अपनी युद्धनीति में परिवर्तन करने, शत्रु को भ्रमित करने तथा युद्धक्षेत्र में मनोवैज्ञानिक दबाव उत्पन्न करने की क्षमता रखता था। उसकी यह विशेषता उसके सैन्य नेतृत्व और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता का परिचायक है।युद्धभूमि में रावण केवल प्रत्यक्ष बल-प्रयोग पर निर्भर नहीं रहता था, बल्कि वह शत्रु की मानसिक स्थिति को प्रभावित करने वाली युक्तियों का भी प्रयोग करता था। परिस्थितियों के अनुसार अपनी उपस्थिति को छिपाना, विरोधी पक्ष को भ्रमित करना तथा युद्ध की दिशा को अपने अनुकूल मोड़ना उसकी विशिष्ट युद्धकला का अंग था। इससे स्पष्ट होता है कि वह केवल पराक्रमी योद्धा ही नहीं, बल्कि एक कुशल रणनीतिकार भी था।रावण की संगठनात्मक क्षमता का परिचय लंका की सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था से भी प्राप्त होता है। स्वर्णमयी लंका की दुर्ग-रचना, उसके चारों ओर स्थित प्राकृतिक सुरक्षा तथा विशाल राक्षस सेना का सुव्यवस्थित संचालन उसकी प्रशासनिक और सैन्य दक्षता को प्रकट करता है। समुद्र से घिरी लंका को सुरक्षित बनाए रखना तथा संकट की परिस्थितियों में सेना का प्रभावी प्रबंधन करना उसकी दूरदर्शी नेतृत्व-क्षमता का प्रमाण है।विशेषणात्मक दृष्टि से रावण के व्यक्तित्व में निहित यह रणनीतिक कौशल उसके चरित्र को और अधिक बहुआयामी बनाता है। वह केवल बलशाली और साहसी योद्धा ही नहीं था, बल्कि बुद्धि, योजना, संगठन और युद्धनीति का भी उत्कृष्ट ज्ञाता था। यही कारण है कि रामायण में उसका चरित्र एक ऐसे प्रतिद्वन्द्वी के रूप

में चित्रित हुआ है, जिसकी शक्ति के साथ-साथ उसकी रणनीतिक क्षमता भी उसे विशिष्ट और स्मरणीय बनाती है।

कामासक्त एवं अधर्मी रावण : विशेषणात्मक विश्लेषण

वाल्मीकि रामायण में रावण का चरित्र केवल शक्ति, विद्वत्ता और पराक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके व्यक्तित्व का एक ऐसा पक्ष भी प्रस्तुत किया गया है जो उसके नैतिक पतन और अधार्मिक प्रवृत्तियों को उद्घाटित करता है। इसी उद्देश्य से महर्षि वाल्मीकि ने उसके लिए दुरात्मना , कामातुर, कामात्मा, परदाराभिमर्शी, स्त्रीलोलुपः तथा अधर्मी जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। ये विशेषण रावण के उस मानसिक और नैतिक स्वरूप को प्रकट करते हैं, जिसने अंततः उसके विनाश का मार्ग प्रशस्त किया। “ह्रियमाणा मया दृष्टा रावणेन दुरात्मना”(किष्किन्धा कांड.58.15) ह्रियमाणा मया दृष्टा रावणेन दुरात्मना कामातुर और कामात्मा विशेषण रावण की अनियंत्रित कामनाओं तथा इन्द्रियासक्ति को व्यक्त करते हैं। यद्यपि वह महान तपस्वी, विद्वान और शक्तिशाली शासक था, तथापि अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण न रख पाने के कारण वह अनेक बार धर्म और मर्यादा की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। उसके व्यक्तित्व की यही दुर्बलता उसे आदर्श राजधर्म और नैतिक आचरण से दूर ले जाती है।इसी प्रकार परदाराभिमर्शी तथा स्त्रीलोलुपः जैसे विशेषण उसके चरित्र के उस पक्ष को उजागर करते हैं, जिसमें वह परस्त्री के प्रति अनुचित आकर्षण रखता है। सीता-हरण इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है। रावण ने छलपूर्वक सीता का अपहरण किया, जो धर्म, न्याय और सामाजिक मर्यादाओं के प्रतिकूल था। यद्यपि उसने अशोकवाटिका में सीता के प्रति बलप्रयोग नहीं किया, फिर भी उनका अपहरण स्वयं में एक गंभीर अधार्मिक कृत्य था। यह घटना उसके अहंकार, वासना और स्वेच्छाचारिता की पराकाष्ठा को दर्शाती है।अधर्मी विशेषण रावण के समग्र नैतिक पतन का द्योतक है। वह शास्त्रों का ज्ञाता और महान तपस्वी होने के बावजूद अपने आचरण में धर्म के मूल सिद्धान्तों का पालन नहीं कर सका। उसके निर्णयों में व्यक्तिगत अभिलाषाएँ, अहंकार और प्रतिशोध की भावना धर्मबुद्धि पर अधिक प्रभावी दिखाई देती हैं। यही कारण है कि उसके ज्ञान, शक्ति और वैभव के बावजूद उसका चरित्र आदर्श नायक के रूप में स्थापित नहीं हो पाता।

विशेषणात्मक दृष्टि से ये नकारात्मक विशेषण रावण के व्यक्तित्व की उन कमजोरियों को सामने लाते हैं, जिन्होंने उसकी समस्त उपलब्धियों को निष्प्रभावी कर दिया। वाल्मीकि इन विशेषणों के

माध्यम से यह संकेत देते हैं कि केवल बल, विद्या और वैभव किसी व्यक्ति को महान नहीं बनाते; जब तक उनमें आत्मसंयम, मर्यादा और धर्मनिष्ठा का समावेश न हो, तब तक उनका पतन अवश्यंभावी है। इस प्रकार रावण का चरित्र मानवीय दुर्बलताओं, अनियंत्रित अहंकार और अधर्म के दुष्परिणामों का एक सशक्त उदाहरण बनकर सामने आता है।

उपसंहार

1) विशेषणात्मक दृष्टि से रावण के चरित्र का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि वह एक ओर महान विद्वान, तपस्वी, शास्त्रज्ञ, वीर योद्धा तथा कुशल शासक था, तो दूसरी ओर अहंकार, काम, क्रोध और दुराग्रह जैसे अवगुणों से भी ग्रस्त था। वाल्मीकि द्वारा प्रयुक्त विभिन्न विशेषण रावण के व्यक्तित्व के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को उद्घाटित करते हैं। उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसका असाधारण सामर्थ्य और ज्ञान है, किंतु यही शक्ति जब मर्यादा और धर्म से विमुख हो जाती है, तब उसके पतन का कारण बनती है। सीता-हरण और राम के प्रति उसका विरोध उसके अहंकार और अधर्म का प्रतीक बन जाता है। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण में रावण का चरित्र मानव जीवन के उस शाश्वत सत्य को अभिव्यक्त करता है कि ज्ञान, शक्ति और वैभव तभी सार्थक हैं जब उनका उपयोग धर्म और लोककल्याण के लिए किया जाए।
2) अतः विशेषणात्मक दृष्टि से रावण का चरित्र एक जटिल एवं विरोधाभासी व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें महानता और दुर्बलता, दोनों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। वाल्मीकि ने विभिन्न विशेषणों के माध्यम से रावण को केवल एक दुष्ट पात्र के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय गुण-दोषों से युक्त ऐसे चरित्र के रूप में चित्रित किया है, जो पाठकों को शक्ति के साथ विनम्रता, ज्ञान के साथ विवेक तथा सामर्थ्य के साथ मर्यादा के महत्व का संदेश देता है। इस दृष्टि से रावण का चरित्र भारतीय साहित्य और संस्कृति में सदैव अध्ययन एवं चिंतन का महत्वपूर्ण विषय बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ :

1 . बुल्के, कामिल। रामकथा : उत्पत्ति और विकास। हिन्दी परिषद् प्रकाशन, 1997।
2. मिश्र, विद्यानिवास। रामकथा और भारतीय संस्कृति। प्रभात प्रकाशन, 2003।
3 . शर्मा, रामविलास। भारतीय संस्कृति और रामायण। राजकमल प्रकाशन, 1998।
4. त्रिपाठी, रामनाथ। रामकथा : विविध आयाम। साहित्य भवन, 2005।
5. शास्त्री, रामनारायण दत्त, सम्पा. श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण। गीता प्रेस, 2021

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 6, June 2026

Impact Factor: 8.2

6. बसु, राजशेखर, अनुवादक। *वाल्मीकि रामायण*। मित्र एवं घोष पब्लिशर्स,।